No. of Printed Pages : 3

एम.एच.डी.-14

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

08471

दिसम्बर, 2017

एम.एच.डी.-14 : हिन्दी उपन्यास-1 (प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *पहला और छठा प्रश्न अनिवार्य है । शेष प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

---

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं *दो* की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *2×10=20*

(क) यहाँ तुम्हें न सुख मिलेगा, न आदर । हाँ, कुछ दिनों भोग-विलास कर लोगी, पर अन्त में इससे भी हाथ धोना पड़ेगा । सोचो तो, थोड़े दिनों तक इन्द्रियों को सुख देने के लिए तुम अपनी आत्मा और समाज पर कितना बड़ा अन्याय कर रही हो ।

(ख) महोदय ने कहा है कि ताल्लुकेदार अपनी प्रजा का मित्र, गुरु और सहायक है । मैं बड़ी विनय के साथ निवेदन करूँगा कि वह इतना ही नहीं, कुछ और भी है, वह अपनी प्रजा का सेवक भी है । यही उसके अस्तित्व का उद्देश्य और हेतु है अन्यथा संसार में उसकी कोई ज़रूरत न थी, उसके बिना समाज के संगठन में कोई बाधा न पड़ती ।

(ग) यह विचार उन लोगों के लिए हैं जिनके प्रेम वासनाओं से युक्त होते हैं । प्रेम और वासना में उतना ही अंतर है, जितना कंचन और काँच में । प्रेम की सीमा भक्ति से मिलती है, और उनमें केवल मात्रा का भेद है । भक्ति में सम्मान और प्रेम में सेवाभाव का आधिक्य होता है ।

(घ) हाँ, यह वास्तव में यात्रा ही थी – अँधेरे से उजाले की, मिथ्या से सत्य की । मन में सोच रही थी, अब यदि ईश्वर की दया हुई और वह फिर लौटकर घर आए, तो वह इस तरह रहेगी कि थोड़े-से-थोड़े में निर्वाह हो जाए । एक पैसा भी व्यर्थ न ख़र्च करेगी । अपनी मज़दूरी के ऊपर एक कौड़ी भी घर में न आने देगी । आज से उसके नए जीवन का आरंभ होगा ।

2. प्रेमचंद के अनुसार 'साहित्य जीवन की आलोचना' है । इस कसौटी पर उनके कथा-साहित्य का मूल्यांकन कीजिए । *10*

3. 'सेवासदन' की अन्तर्वस्तु पर विचार कीजिए । *10*

4. " 'प्रेमाश्रम' ब्रिटिशकालीन ज़मींदारी प्रथा की शोषण-गाथा है ।" इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए । *10*

5. 'रंगभूमि' में चित्रित असहयोग आन्दोलन का विवेचन कीजिए । *10*

6. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×5=10*

(क) बिट्ठलदास

(ख) जालपा का चरित्र

(ग) 'प्रेमाश्रम' की भाषा

(घ) 'रंगभूमि' में अंग्रेज़